FREEMIND

Date

Page

Type of Correlation

सहसंबंध के प्रकार को हम इस प्रकार दिखा सकते है —

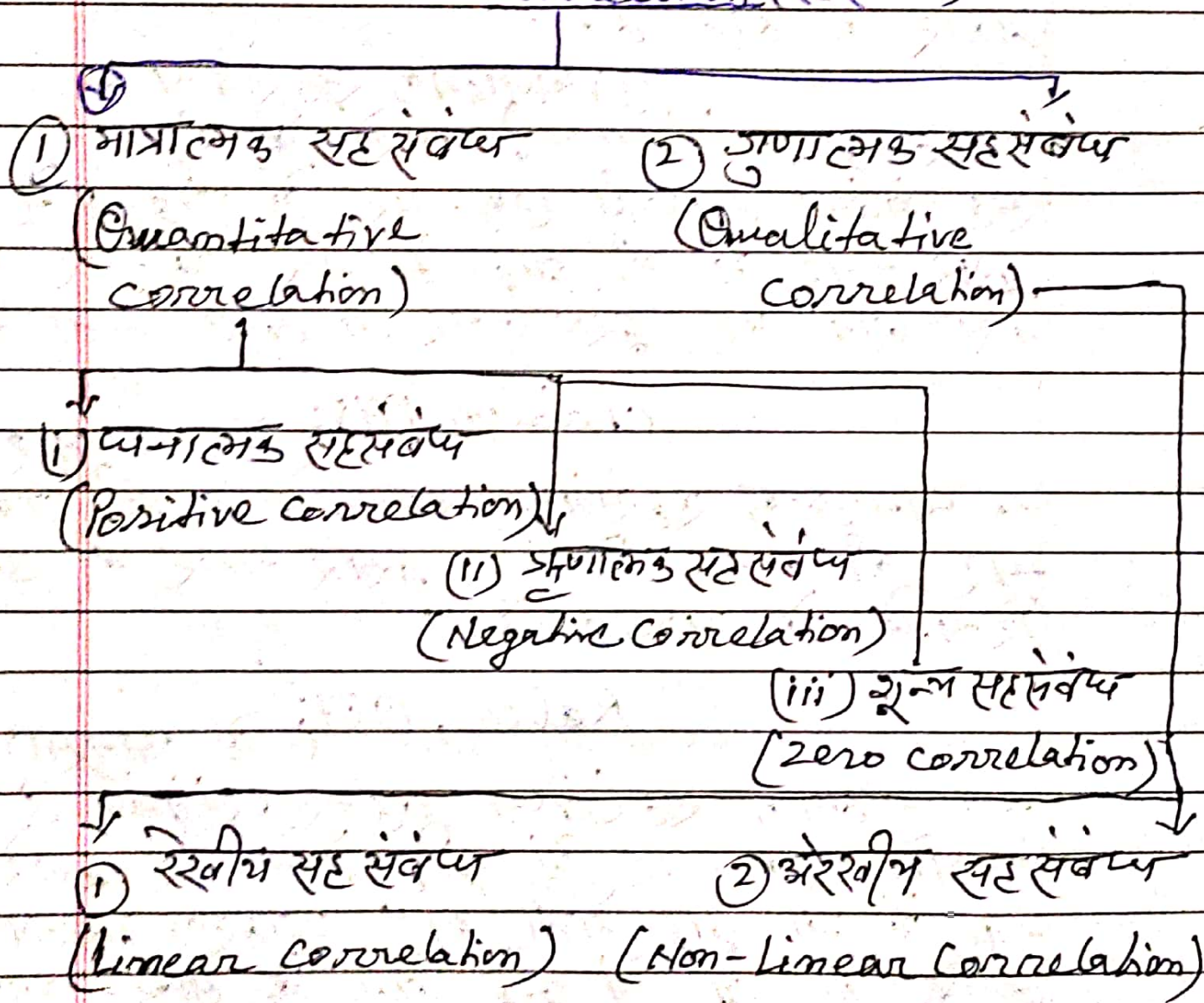

Scanned with CamScanner

FREEMIND

Date ________

Page ________

(i) मात्रात्मक सहसंबंध – जब दो चरों या दो परीक्षणों के प्राप्तांक का सहसंबंध रेखा द्वारा अभिव्यक्त न कर संख्या द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है, तो उसे मात्रात्मक सहसंबंध कहते हैं। मात्रात्मक सहसंबंध तीन प्रकार के होते हैं –

(i) धनात्मक सहसंबंध –

धनात्मक सहसंबंध दो चरों के बीच वह सहसंबंध है, जहाँ एक चर में वृद्धि होने पर दूसरे चर में भी वृद्धि है और एक चर में ह्रास होने पर दूसरे चर में ह्रास होता है।

Chaplin, 1975; के अनुसार –
" धनात्मक सहसंबंध बतलाते हैं कि एक चर की उच्च स्थिति दूसरे चर की उच्च स्थिति से सम्बद्ध है।"

Reber, 1987; के अनुसार –
" धनात्मक सहसंबंध वह सहसंबंध है जिसमें एक चर में वृद्धि होने पर दूसरे चर में भी वृद्धि होती है।" उदाहरण स्वरूप व्यक्ति की उम्र में वृद्धि होने के साथ-साथ उसके संवेगात्मक परिपक्वता में वृद्धि होगा। जैसे-जैसे व्यक्ति की उम्र बढ़ती है वैसे-वैसे

Scanned with CamScanner

FREEMIND

Date

Page

सामान्यतः संवेगात्मक परिपक्वता भी बढ़ती जाती है। यहाँ दोनो चरों अर्थात उम्र तथा संवेगात्मक परिपक्वता भी बढ़ती जाती है। यहाँ दोनों चरों अर्थात उम्र तथा संवेगात्मक परिपक्वता भी बढ़ती जाती है। यहाँ दोनो चरों अर्थात उम्र तथा संवेगात्मक परिपक्वता में एक ही तरह का परिवर्तन हो रहा है। अतः ऐसे सहसंबंध को धनात्मक सहसंबंध कहते है। धनात्मक सहसंबंध का प्रसार 0.01 से 1.00 तक होता है।

(ii) ऋणात्मक सहसंबंध — ऋणात्मक सहसंबंध में धनात्मक सहसंबंध के विपरीत स्थिति पायी जाती है। जब दो चरों के मध्य एक में वृद्धि और दूसरे चर चर में ह्रास देखने को मिले या एक चर में ह्रास और दूसरे चर में वृद्धि देखने को मिले, तो ऐसे संबंध को ऋणात्मक सहसंबंध कहते है। इसमें दोनों चरों की दिशा एक न होकर विपरीत होती है।

Chaplin, 1975; के शब्दों में "ऋणात्मक सहसंबंध से पता चलता है कि एक चर की उच्च स्थिति तथा दूसरे चर की निम्न स्थिति सम्बद्ध है।"

Scanned with CamScanner

FREEMIND

Date

Page

Reber, 1987; के अनुसार —
"ऋणात्मक सहसंबंध वह सहसंबंध है, जिसमें एक चर के बढ़ने से दूसरा चर घटता है।" जैसे— मकान तथा उत्पादकता के बीच कार्य की धीमी गति एवं सुदृढ़ता के बीच इसी प्रकार का सहसंबंध पाया जाता है। मकान की मात्रा बढ़ने पर उत्पादन में कमी आने लगती है कार्य की गति तेज कर देने पर प्रायः सुदृढ़ता की मात्रा में कमी आने लगती है। ऋणात्मक सह संबंध का प्रसार -0.01 से -1.00 होता है।

(iii) शून्य सहसंबंध — जब दो चरों के बीच कोई संबंध नहीं होता है तो उसे शून्य सहसंबंध कहते हैं एक चर में वृद्धि या ह्रास का प्रभाव दूसरे चर पर न पड़े अर्थात दोनों चर एक दूसरे चर पर कोई प्रभाव न पड़े, अर्थात दोनों चर एक दूसरे चर पर कोई प्रभाव न डाले तो दोनों चरों के बीच ऐसे सहसंबंध को शून्य सहसंबंध कहा जायेगा। प्रायः ऐसा देखा जाता है कि बालक की उंचाई और बुद्धिलब्धि एक-दूसरे पर कोई प्रभाव नहीं डालती है। बुद्धिलब्धि कम या अधिक होने पर बालक की उंचाई

Scanned with CamScanner

FREEMIND

Date

Page

पर कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता है। अतः इन दोनों चरों के संबंध को शून्य सह संबंध कहा जायेगा।

इस प्रकार स्पष्ट है कि सहसंबंध के तीन प्रकार हैं, किन्तु शून्य सहसंबंध को सहसंबंध कहना सही प्रतीत नहीं होता है। क्यों कि सहसंबंध की परिभाषा के अनुसार दो चरों के बीच धनात्मक या ऋणात्मक संबंध होना आवश्यक है। अतः वास्तव में सहसंबंध केवल दो प्रकार के होते हैं। धनात्मक सहसंबंध तथा ऋणात्मक सहसंबंध।

Dr. Om Prakash Keshri
P.G. Deptt of Psychology
Maharaja College, ARA.

Scanned with CamScanner